9

# प्राथमिक स्तर पर भाषा शिक्षण के माध्यम

नीलम कुमारी*

भाषा जीवन के विविध पक्षों को आत्मसात करने और फिर उसे दूसरों के लिए अभिव्यक्त करने का महत्वपूर्ण उपकरण है, इसलिए बच्चों में भाषा शिक्षण का महत्व बढ़ जाता है। बच्चों को भाषा सिखाना ज़रूरी है, किंतु यदि यह पुस्तकों के बोझ के बदले खेलों के आनंद के साथ हो तो अधिक उपयोगी हो सकता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के साथ आई बालवाटिका इस दिशा में उठाया गया एक महत्वपूर्ण कदम है। इसके साथ ही खिलौनों के ज़रिए बच्चों को गतिविधियों में शामिल करने तथा इस प्रक्रिया में भाषा सिखाने का कदम बच्चों को बस्ते के बोझ से मुक्त करेगा तथा उनमें पढ़ने के प्रति स्वाभाविक रुचि के विकास में सहायक होगा। भाषा शिक्षण का यह आसान और मज़ेदार लगने वाला तरीका बिना प्रशिक्षित शिक्षकों के बोझिल और उबाऊ हो जाएगा। शिक्षकों के साथ ही भाषा के विकास में परिवार और समुदाय की भी महत्वपूर्ण भूमिका है। समुदाय के शब्द-भंडार के भीतर से ही बच्चे अपने शब्द चुन सकते हैं। इन शब्द-भंडार को बच्चों तक पँहुचाने वाली रा.शै.अ.प्र.प. की पाठ्यपुस्तकें बच्चों के प्राथमिक स्तर के भाषा शिक्षण के महत्वपूर्ण साधन हैं। ये पाठ्यपुस्तकें बच्चों की विभिन्न अवस्थाओं के अनुसार बनाई गई हैं।

भाषा संज्ञानात्मक बोध का एक उपकरण है। यह वैयक्तिक अभिव्यक्ति का माध्यम भी है और सामाजिक संप्रेषण का साधन भी। ऐसे में यह प्राथमिक स्तर के शिक्षण के लिए भी एक महत्वपूर्ण क्षेत्र बन जाता है। बच्चों को अपने हम उम्र बच्चों से जुड़ना हो या ज्ञान हासिल करना हो भाषा उनकी अनिवार्य ज़रूरत है। बच्चों में भाषायी ज्ञान को विकसित करने का सबसे सरल और कारगर तरीका है कि उन्हें आरंभिक वर्षों से ही शुद्ध भाषा का ज्ञान कराया जाए। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को कार्यान्वित करने के प्रयासों में बच्चों को स्कूली शिक्षा के अतिरिक्त अनौपचारिक से औपचारिक शिक्षा की ओर अग्रसर किया जा रहा है। भाषा अर्जन और अधिगम के लिए भी इसी नीति का पालन किया जा रहा है। भाषा शिक्षण के प्रयास किसी किताबी ज्ञान के बजाय खेल-खिलौनों के माध्यम से किए जा रहे हैं। बच्चों की बहुआयामी प्रतिभाओं को नज़रअंदाज़ न किया जाए इसलिए उनके सर्वांगीण विकास पर भी ध्यान

*शोधार्थी, हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली 110 007

दिया जा रहा है। इन विविध प्रयासों में भाषा शिक्षण का प्रयास भाषा सिखाने के साथ ही सर्वांगीण विकास का माध्यम भी बन जाता है। बच्चों को प्राथमिक स्तर पर भाषा-ज्ञान देने के लिए शिक्षकों को बहुत मेहनत करने की आवश्यकता है। उनके साथ अभिभावकों को भी बच्चों की शिक्षा के प्रति जागरूक करने की आवश्यकता है।

आज की शिक्षा प्रणाली शिक्षा में भाषा-सुधार पर अधिक ज़ोर दे रही है। यह प्रसिद्ध है कि किसी भी समाज को बदलने के दो तरीके हैं। पहला, बदलाव नीचे से ऊपर की ओर किया जाए। यह कारगर साबित हो सकता है, किंतु इसमें परिणाम बहुत देरी से प्राप्त होंगे। अतः यह एक लंबा रास्ता है। दूसरा, समाज में बदलाव ऊपर से नीचे की ओर किया जाए। यह सबसे छोटा तथा त्वरित परिणाम देने वाला रास्ता है। यहाँ नीचे से ऊपर का अर्थ है— बदलाव पहले व्यक्तिगत रूप में किया जाए, फिर परिवार, परिवार से समुदाय, समुदाय से समाज तथा समाज से राष्ट्र के स्तर पर सुधार किया जाए। इस क्रम को उलट देने से परिवर्तन की गति तीव्र हो जाती है। भाषा शिक्षण में सुधार के लिए भी यही रास्ता अधिक उपयोगी होगा। विशेष रूप से जब यह सरकार द्वारा राष्ट्र के स्तर पर शुरू किया जाए।

शिक्षा के क्षेत्र में भाषायी सुधार लाने का सबसे कारगर उपाय स्कूली शिक्षा में सुधार है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के कारण स्कूलों में बालवाटिका का प्रवेश बच्चों को खेल-खेल में शिक्षित करने की ओर अग्रसर करेगा, उन्हें पर्यावरण से जोड़ेगा। इन सब में मददगार साबित होगा— खिलौना आधारित शिक्षाशास्त्र तथा इसका माध्यम बनेगी भाषा। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार "वर्तमान समय में ई.सी.सी.ई. की सभी तक पहुँच नहीं होने के कारण बच्चों का एक बड़ा हिस्सा प्रथम कक्षा में प्रवेश पाने के कुछ ही हफ्तों बाद अपने सहपाठियों से पिछड़ जाता है। इसलिए एन.सी.ई.आर.टी. और एस.सी.ई.आर.टी. के द्वारा कक्षा-1 के विद्यार्थियों के लिए अल्पकालीन 3 महीने का प्ले-आधारित 'स्कूल तैयारी मॉड्यूल' बनाया जाएगा जिसमें गतिविधियाँ और वर्क बुक होगी जिनमें— अक्षर, ध्वनियाँ, शब्द, रंग, आकार, संख्या आदि शामिल होंगे।"(पृष्ठ 12) यह सब इसलिए किया जा रहा है ताकि शिक्षक और अभिभावक आरंभिक अवस्था में बच्चों को औपचारिक शिक्षा देने से बचें। बच्चे में पढ़ने के प्रति रुचि जाग्रत हो और वह अपनी इच्छा से पुस्तकों से जुड़े। इन सब गतिविधियों को पूरा करने में भाषा एक उपकरण का काम करती है। विभिन्न गतिविधियों के ज़रिए बच्चों का शब्द भंडार बढ़ता जाता है और वह भाषा सीखता जाता है। फिर वह इन्हीं शब्दों का प्रयोग कर अपना भाव प्रकट करता है तथा लोगों से जुड़ता है। भाषा के संदर्भ में नेशनल करीकुलम फ्रेमवर्क 2005 में इस बात का उल्लेख मिलता है कि— "भाषा एक औज़ार है जिसका इस्तेमाल हम ज़िंदगी को समझने के लिए, उससे जुड़ने के लिए और जीवन-जगत को प्रस्तुत करने के लिए करते हैं।" (पृष्ठ 9) बाल वाटिका जैसे प्रयासों से बच्चा स्वतः भाषा का जीवन के विविध रूपों से जुड़ने और अपने भावों को प्रकट करने के लिए औज़ार की तरह उपयोग करने लगता है।

बच्चों को भाषा केवल किताबी ज्ञान से नहीं सिखाई जा सकती है। इसके लिए शिक्षकों को भी प्रशिक्षित होना होगा। शिक्षकों को इस बात का बोध होना चाहिए कि बच्चों को भाषा खेलों के माध्यम से भी सिखाई जा सकती है। इस बात का समर्थन

रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा विकसित खेल संदर्शिका आओ खेलें भी करती है। उसमें 'शैशवावस्था के खेल' अध्याय के अंतर्गत इस बात का उल्लेख किया गया है कि— "शिशु के भाषा विकास तथा ज्ञानेन्द्रियों के विकास में भी ये खेल महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।" (पृष्ठ 9) संदर्शिका के अनुसार "शैशवावस्था के खेलों से शिक्षिका को भी परिचित होना चाहिए, ताकि शिशु के विद्यालय जाने पर इन खेलों की पुनरावृत्ति करा सके। इससे बच्चों की झिझक दूर होगी और वे सहजता से विद्यालय के परिवेश में समायोजित हो सकेंगे।" (पृष्ठ 9)

इसमें संदेह नहीं कि भाषा सीखने-सिखाने का क्रम बच्चे के जन्म से ही आरंभ हो जाता है। घर में अभिभावक तथा विद्यालय में शिक्षकों की देखरेख में बच्चा भाषायी ज्ञान सीखता है। यह ध्यान देने वाली बात है कि जब भी भाषा सिखाने के लिए खेलों को माध्यम बनाया जाए तब किसी खास उपकरण की आवश्यकता नहीं होती है, बल्कि "...आवश्यकता केवल शिक्षिका के दृष्टिकोण में परिवर्तन लाने की है, ताकि वह अपनी शिक्षण नीति में अपेक्षित परिवर्तन लाए। वह खेलों के महत्व को समझे और अपने शिक्षण में कुशलता एवं समझदारी से उनका अधिकाधिक प्रयोग करे।" *आओ खेलें*, प्रस्तावना, पृष्ठ 1) खेलों के प्रयोग से बच्चे का शिक्षण प्रक्रिया से सहज जुड़ाव पैदा होता है जिससे उसकी भाषा या अन्य कुछ सीखने की प्रक्रिया तेज़ हो जाती है और मनोरंजक भी।

भाषा शिक्षण के दौरान आवश्यकता है बच्चों की समस्याओं को समझने की। शिक्षक हो या शिक्षिका बच्चे के भाषायी विकास की अनदेखी कर देने से बच्चा कई बार अकेलापन महसूस करने लगता है। वह धीरे-धीरे सामाजिक गतिविधियों से पीछे हटने लगता है। ऐसा न हो इसके लिए शिक्षकों को सतर्क रहने की आवश्यकता है।

## बच्चे के बहुमुखी विकास में भाषा की भूमिका

भाषा बच्चों के बहुमुखी विकास में सहायक होती है। भाषा व्यक्ति के विचारों को व्यवस्थित रूप में प्रकट करने का माध्यम है। इसका बुनियादी महत्व बच्चे के चिंतन, स्मृति, तर्क-वितर्क, समस्या का समाधान आदि प्रक्रियाओं में और अधिक बढ़ जाता है। शिक्षकों को चाहिए कि वे बच्चों को ऐसा वातावरण दें "जहाँ वे बिना किसी रोक-टोक के अपनी उत्सुकता के अनुसार अपने परिवेश की खोज-बीन कर सकें।" (*प्रारंभिक स्तर पर सीखने के प्रतिफल*, पृष्ठ 1) इससे बच्चे अपनी समझ तथा ज्ञान को स्वयं निर्मित कर सकेंगे। भाषा सीखने-सिखाने का क्रम परस्पर चलने वाली क्रिया है। इसी क्रिया के अनुरूप बच्चा विभिन्न विषयों— हिंदी, अंग्रेज़ी, गणित आदि का ज्ञान अर्जित करता है। भाषा का अर्जन और अधिगम बच्चों की विभिन्न क्षेत्रों से जुड़ी संकल्पनाओं को समझने में भी सहायक होता है। *प्राथमिक स्तर पर न्यूनतम अधिगम स्तर* के अध्याय तीन 'भाषा में न्यूनतम अधिगम स्तर' में भाषा अधिगम को प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों से जोड़कर देखा गया है। इसके अनुसार विभिन्न भाषायी कौशल विद्यार्थी के व्यक्तित्व का निर्माण करने में सहायक सिद्ध होते हैं। ये भाषायी कौशल हैं— सुनना-बोलना, पढ़ना-लिखना, समझना, भाषा का प्रयोग करना आदि। क्योंकि भाषा सीखी और सिखाई जाती है इसीलिए भाषा अधिगम के कुछ उद्देश्य भी निर्धारित किए गए हैं, जैसे— "समझते हुए सुनना; औपचारिक एवं अनौपचारिक वार्तालाप में प्रभावी

ढंग से बोलना; समझते हुए पढ़ना और विभिन्न प्रकार की शैक्षिक सामग्री को रस लेते हुए पढ़ना; तार्किक क्रम और मौलिकता के साथ साफ़-साफ़ लिखना; सुनकर एवं पढ़कर विचारों को समझना; विभिन्न संदर्भों में व्याकरण का प्रकार्यात्मक प्रयोग करना।" *प्राथमिक स्तर पर न्यूनतम अधिगम स्तर,* पृष्ठ 15) यदि कक्षा में शिक्षक उपरोक्त बिंदुओं के आलोक में बच्चों को पढ़ाएँ तो बच्चा किसी भी विषय को आसानी से पढ़कर समझ सकता है। ज़रूरी है बच्चे को समझाना, ताकि वह पढ़ाए जाने वाले विषयों का आनंद भी ले सके। बच्चों का रुझान पढ़ाई में और अधिक बढ़ाने के लिए भारत की शिक्षा प्रणाली में बड़े-से-बड़ा तथा छोटे-से-छोटा सुधार किया जा रहा है। ई-पाठशाला, स्वयं, स्वयंप्रभा, दीक्षा इत्यादि अनेकों डिजिटल प्रयास भी बच्चों के शैक्षिक विकास को लक्षित करते हुए ही चलाए जा रहे हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत बच्चों के लिए रा.शै.अ.प्र.प. के प्रयास से बालवाटिका— 1, 2, 3 का निर्माण बुनियादी स्तर पर बच्चों के शैक्षिक विकास के लिए ही किया जा रहा है। इसमें संदेह नहीं कि आने वाला समय बच्चों के लिए चुनौतिपूर्ण साबित होगा। इसके लिए बच्चों को भाषायी तौर पर सक्षम बनाना होगा, ताकि वे स्वयं को आत्मविश्वास के साथ अभिव्यक्त तथा प्रस्तुत कर सकें। यह प्रयास भारत सरकार के साथ-साथ शिक्षकों तथा अभिभावकों सभी को मिलकर करना होगा।

## बच्चे के सर्वांगीण विकास में भाषा की भूमिका

भाषा बच्चों के विकास से जुड़ा अत्यधिक महत्वपूर्ण विषय है, इसीलिए भाषा को बच्चे के सर्वांगीण विकास से जोड़कर देखा गया है। बच्चों के व्यक्तित्व के सभी आयामों पर बारीकी से शोध किए गए हैं जिसके आधार पर *पूर्व-प्राथमिक पाठ्यचर्या* में पूर्व प्राथमिक शिक्षा के दो लक्ष्य निर्धारित किए—"बच्चों का सर्वांगीण विकास और आजीवन सीखने हेतु मज़बूत नींव डालना। बच्चों को विद्यालय के लिए तैयार करना।" (*पूर्व-प्राथमिक पाठ्यचर्या*, पृष्ठ 2) यह पाठ्यचर्या बच्चों में आरंभ से ही उसके समग्र विकास से जुड़ी विभिन्न गतिविधियों का उल्लेख करती है। भाषा का विकास इन्हीं में से एक पक्ष है। प्राथमिक स्तर पर बच्चों के विकास के लिए कई अथक प्रयास किए जा रहे हैं। कहीं पाठ्यचर्या का निर्माण किया जा रहा है, कहीं खेल को आधार बनाकर बच्चों की सीखने की प्रक्रिया आनंददायक बनाने का प्रयास किया जा रहा है, कहीं उनके लिए विभिन्न पुस्तकों का निर्माण किया जा रहा है। मज़ेदार बात यह है कि यह सब उस बच्चे के लिए किया जा रहा है जो दुनिया को देखना अभी शुरू ही करेगा, शब्द-ज्ञान, संख्या-ज्ञान सीखेगा। बुनियादी स्तर पर ये सभी प्रयास दिखाते हैं कि बच्चे को एक दिशा देनी आवश्यक है, ताकि वह सीखे अपनी मर्ज़ी से किंतु उसके लिए मार्ग पहले से ही प्रशस्त हो। *प्रारंभिक बाल शिक्षा कार्यक्रम* के अध्याय 2.3 '*प्रारंभिक बाल शिक्षा कार्यक्रम* में शिशु— वह कैसा है?' में बच्चे के सर्वांगीण विकास से संबंधित कुछ बिंदुओं का उल्लेख किया गया है जो निम्नलिखित हैं—

- सृजनात्मक अभिव्यक्ति तथा सौंदर्य बोध का विकास;
- शारीरिक विकास एवं मांसपेशियों का विकास;
- भाषा विकास;

- संवेगात्मक विकास;
- सामाजिक विकास;
- संज्ञानात्मक अथवा बौद्धिक विकास।

उपरोक्त सभी बिंदु बच्चे के सर्वांगीण विकास में सहायक हैं। इन्हीं बिंदुओं में से एक 'भाषा विकास' है। इसमें संदेह नहीं कि बच्चे भाषा कई तरह से सीखते हैं, जैसे—

- अपने आस-पास के लोगों की नकल करके।
- अपने आस-पास के लोगों से प्रोत्साहन पाकर।
- विचारों और भावनाओं को सुनकर तथा उनकी अभिव्यक्ति करके। (प्रा.बा.शि.का., पृष्ठ 163)

इन बिंदुओं को ध्यान में रखते हुए कक्षा में शिक्षकों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे बच्चों को बोलते समय किसी तरह की रोक-टोक न करें। वे बच्चों को ज़्यादा-से-ज़्यादा सीखने के अवसर दें। इसके लिए कक्षा में विभिन्न नई-नई गतिविधियों या क्रियाओं का आयोजन करें, ताकि बच्चों के अनुभव और उनकी शब्दावली समृद्ध हो सके। बच्चे भाषा को सही से बोलना सीखें, इसके लिए आवश्यक है कि उनसे लगातार बातचीत की जाए, चुपचाप रहने या कम बोलने वाले बच्चों को बोलने के लिए प्रेरित किया जाए ताकि उनकी झिझक दूर हो। बच्चों को पढ़ने के लिए सचित्र पुस्तकें ही दी जानी चाहिए, ताकि वे तस्वीरों को पहचानें, रंगों को पहचानें तथा आवश्यकता पड़ने पर बच्चे उन तस्वीरों के बारे में बात कर सकें। क्योंकि 'नकल करना' बच्चों की स्वाभाविक प्रवृत्ति है ऐसे में शिक्षकों को यह ध्यान रखना चाहिए कि वे "हमेशा विनम्रता एवं शिष्टतापूर्वक बातें करें तथा शुद्ध भाषा का प्रयोग करें, बच्चे सहज ही शिक्षिका की नकल करते हैं।" (*प्रारंभिक बाल शिक्षा कार्यक्रम*, पृष्ठ 165) इन सभी बातों का ध्यान शिक्षकों के साथ-साथ यदि संभव हो सके तो अभिभावकों को भी रखना चाहिए, क्योंकि बच्चा अपने परिवेश से ही भाषा सीखता है। इस संबंध में प्रसिद्ध भाषाविद कामताप्रसाद गुरु का मत है कि— "भाषा पर स्थान, जलवायु और सभ्यता का बड़ा प्रभाव पड़ता है।" (हि.व्या., पृष्ठ 18) अतः ऐसे में यह कहा जा सकता है कि निश्चय ही बच्चे के आसपास का परिवेश उसके भाषिक प्रयोग को प्रभावित करता है।

***प्रभावशाली संप्रेषक कैसे बनें***

बच्चे प्रभावशाली संप्रेषक तब बनेंगे जब उनकी भाषा समृद्ध और अनुभव संपन्न होगी। इसके लिए शिक्षकों के साथ-साथ अभिभावकों को भी शिक्षित किए जाने की आवश्यकता है। उन्हें पूर्व प्राथमिक शिक्षण की शिक्षण प्रक्रिया, बाल-विकास, बच्चों के स्वास्थ्य और पोषण से संबंधित आवश्यक पहलुओं आदि से परिचित कराना आवश्यक है। बच्चे प्रभावशाली संप्रेषक तभी बनेंगे जब उनके अभिभावक उन्हें वह स्वतंत्रता प्रदान करेंगे जिसमें बच्चा डर को भुलाकर सही-गलत की पहचान स्वयं कर सके, न कि डर के कारण वह किसी कार्य को करे। भाषा मात्र उपकरण ही नहीं है, अपितु वह साधन भी है। एक ऐसा साधन जिससे दो लोग आपस में संपर्क साधते हैं। *पूर्व-प्राथमिक पाठ्यचर्या* में इस बात का उल्लेख मिलता है कि अभिभावक और शिक्षक के संपर्क के अवसर होने चाहिए। उसके अनुसार महीने या तीन महीने में एक ऐसी सभा का आयोजन होना चाहिए जिसमें शिक्षक और अभिभावक एक-दूसरे से बच्चे की उपलब्धियों, खूबियों-खामियों पर बातचीत कर सकें।

आवश्यकता पड़ने पर बच्चे की समस्या का समाधान भी निकाल सकें।

***भाषा विकास में समुदाय की भागीदारी***

बच्चे के भाषायी विकास में समुदाय की भी अहम भूमिका है। *पूर्व-प्राथमिक पाठ्यचर्या* के अनुसार "समुदाय के सदस्यों की भागीदारी से बच्चों और उनके परिवार को बेहतर ढंग से समझने में मदद मिलती है। यदि समुदाय जागरूक होगा तो ही बच्चों की आवश्यकताएँ पूरी हो सकती हैं।" (पृष्ठ 68) बच्चा किसी शब्द का अर्थ समझने के लिए पहले अपने अभिभावकों से प्रश्न करता है किंतु उनकी अनुपस्थिति में यह उत्तर न मिलने की स्थिति में समाज के अन्य लोगों के पास ही जाता है। यह स्वाभाविक है कि जहाँ सार्वजनिक स्थलों पर सही और अच्छे शब्द या वाक्य लिखे होते हैं, बच्चा उसे पढ़ते हुए स्वतः ही भाषा अर्जित करता है। किसी भी बच्चे का भाषा-विकास उसके परिवेश से ही विकसित होता है। यह तथ्य जान लेने के बाद यह समझना और आसान हो जाता है कि किन-किन सुधारों की बच्चे को आवश्यकता है। इससे उसके परिवेश में भी सुधार लाया जा सकता है।

***पाठ्यपुस्तकें और प्राथमिक स्तर की भाषा***

प्राथमिक स्तर की भाषा सहज ही बोली जाने वाली भाषा है। इसमें अभिधा में बोली जाने वाली शैली का प्रयोग किया जाता है अर्थात किसी बात को सीधे-सीधे कहना। इसका शब्दकोश में भी वही अर्थ मिलेगा जिस संदर्भ में वह शब्द बोला गया है, जैसे— 'आम', 'फल'। इन शब्दों के 'सामान्य', 'परिणाम' जैसे अर्थ भी निकाले जाते हैं, किंतु बच्चों की समझ को देखते हुए पहले एक अर्थ से उन्हें परिचित कराया जाता है, ताकि तस्वीर देखकर वो उसका अर्थ लगा सकें। बच्चों के भाषा सीखने का संदर्भ लेते हुए रिमझिम-1' में इस बात का उल्लेख मिलता है कि— "पहली कक्षा में आने वाले बच्चे समृद्ध और विकसित मातृभाषा ज्ञान के साथ आते हैं। वह अपनी भावनाओं और ज़रूरतों को भाषा के माध्यम से बखूबी अभिव्यक्त कर लेते हैं।" (बड़ों से दो बातें, पृष्ठ 5) बच्चे जिस परिवेश में रहते हैं, भाषा को जिस संदर्भ में प्रयोग होता देखते हैं स्वयं भी उसी संदर्भ में भाषा का प्रयोग करने लगते हैं। बच्चे जब भाषा का प्रयोग पढ़ने-लिखने के लिए करते हैं तब शिक्षकों को यह ध्यान भी रखना चाहिए कि बच्चे दैनिक जीवन में भी उस भाषा का प्रयोग करें। इससे वे तर्क करना, विश्लेषण करना, अनुमान लगाना, अभिव्यक्त करना तथा कल्पना करना सीख सकेंगे। 'झूला', 'आम की कहानी', 'पकौड़ी', 'रसोईघर', 'बंदर और गिलहरी', 'पतंग' आदि पहली कक्षा में पढ़ाए जाने वाले वे विषय हैं जिन्हें बच्चों द्वारा दैनिक जीवन में उपयोग में लाया जाता है। बच्चों में पढ़ने-लिखने के प्रति रुझान को बढ़ाने के लिए कक्षा 2 की पाठ्यपुस्तक *रिमझिम-2* में भाषा को कविता गाने, कहानी को सुनने और सुनाने, भाषा से संबंधित विभिन्न रोचक खेलों को खेलने का माध्यम माना गया है। इस पुस्तक में बच्चों में विभिन्न भाषायी कौशलों को विकसित करने के उद्देश्य से रंग-बिरंगे आकर्षक चित्रों का उपयोग भी किया गया है। *रिमझिम-4* में यह बताया गया है कि पुस्तक में चित्रों का प्रयोग पुस्तक को केवल आकर्षक बनाने के लिए नहीं किया गया है। इससे पाठ की समझ में विस्तार और गहराई लाने का काम भी लिया गया है। जब बच्चा शब्दों से परिचित हो चुका हो तो नए-नए

शब्दों से परिचय के लिए आवश्यक हो जाता है कि शिक्षक बच्चों को शब्दकोश की ओर मुड़ने का रास्ता दिखाएँ। *रिमझिम 5* भी इसी दिशा में क़दम उठाया गया है। इस पाठ्यपुस्तक में शब्द और अर्थ शब्दकोश के क्रम के अनुसार रखे गए हैं जिससे लिखित भाषा को समझने में बच्चों को कठिनाई नहीं होगी। इस प्रकार प्राथमिक स्तर की पाठ्यपुस्तकों का निर्माण बच्चों के भाषायी विकास को ध्यान में रखकर किया गया है।

## निष्कर्ष

प्राथमिक स्तर पर भाषा शिक्षण एक गंभीर उत्तरदायित्व है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप विकसित होने वाली बालवाटिका की संकल्पना प्राथमिक स्तर के भाषा शिक्षण के आरंभिक चरण के लिए महत्वपूर्ण प्रयास सिद्ध होगा। खेलों तथा खिलौनों के ज़रिए भाषा अर्जन और अधिगम का प्रयास शिक्षकों के प्रशिक्षण के ज़रिए और भी सार्थक बनाया जा सकता है। परिवार तथा समाज भाषा सीखने के प्रयासों के लिए उचित परिवेश उपलब्ध कराकर शिक्षकों के प्रयासों को अधिक उपयोगी बना सकता है। रा.शै.अ.प्र.प. की पाठ्यपुस्तकों एवं अन्य प्रशिक्षण सामग्री के उपयोग से बालवाटिका से शुरू हुई भाषा शिक्षण की यात्रा को प्राथमिक स्तर के ऊच्चतम सोपान तक ले जाना सहज होगा। इन पाठ्यपुस्तकों को बच्चों की मस्तिष्क की अवस्थाओं को ध्यान में रखकर बनाया गया है। इसलिए ये भाषा शिक्षण के चरणबद्ध साधन होंगें। खिलौनों, खेलों से लेकर पाठ्यपुस्तकों एवं सामाजिक गतिविधियों के ज़रिए बच्चों के भाषा सामर्थ्य को उन्नत बनाया जा सकता है।

## संदर्भ


कौल, विनीता. 1996. *प्रारंभिक बाल शिक्षा कार्यक्रम*. (सुषमा सिंह, *अनुवादक*) पूर्व प्राथमिक एवं प्रारंभिक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली.

_____ और रोमिला भटनागर. 1992. *प्रारंभिक बाल शिक्षा— प्रशिक्षार्थी पुस्तिका*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली.

गुरु, कामता प्रसाद. 2014. *हिन्दी व्याकरण*. वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली.

मानव संसाधन विकास मंत्रालय. 1991. *प्राथमिक स्तर पर न्यूनतम अधिगम स्तर*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली.

मिश्र, राधामोहन (*संयोजक*) और सुषमा सिंह (*सह-संयोजिका*). 1986. *आओ खेलें*. राज्य शैक्षिक प्रशिक्षण एवं अनुसंधान परिषद्, राज्य शिक्षा संस्थान, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश.

रा.शै.अ.प्र.प. 2006. *नेशनल करिकुलम फ्रेमवर्क 2005— सिलेबस फॉर क्लासेज ऐट द ऐलिमैंट्री लेवल* (संस्करण 1). राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली.

_____. 2006. *रिमझिम 1*. पुनर्मुद्रण संस्करण, 2021. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली.

_____. 2017. *प्रारंभिक स्तर पर सीखने के प्रतिफल*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली.

_____. 2019. *पूर्व-प्राथमिक पाठ्यचर्या*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली.

शिक्षा मंत्रालय. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. भारत सरकार, नई दिल्ली.